



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 107]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 9, 2009/फाल्गुन 18, 1930

No. 107]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 9, 2009/PHALGUNA 18, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 मार्च, 2009

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जन.गण. से “टायर क्यूरिंग प्रेसों” जिन्हें टायर बल्कनाइजर अथवा टायरों के लिए रबड़ प्रोसेसिंग मशीनों के रूप में भी जाना जाता है, के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

फा. सं. 14/22/2007-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

1. यतः मै. लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई, तमिलनाडु (जिसे आगे आवेदक कहा गया है) ने चीन जन.गण. जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल की या वहां से निर्यातित टायर के विनिर्माण के दौरान टायरों की क्यूरिंग हेतु प्रयुक्त सभी प्रकार की टायर क्यूरिंग प्रेसों (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष अधिनियम और नियमावली के अनुसार एक आवेदन प्रस्तुत किया था और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए जांच शुरू करने का अनुरोध किया था। संबद्ध देश को नियम 5(5) के अनुसार आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया गया था ।

2. और यतः प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और उसके प्रभाव की जांच करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने, जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 16 अक्टूबर, 2008 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया ।

क. प्रक्रिया

3. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत को अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच से संबंधित निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :-

- (i) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था ।
- (ii) प्राधिकारी ने नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां उपलब्ध कराईं । अगोपनीय आवेदन की प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पार्टियों को भी कराई गई थी ।
- (iii) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें नियम 6(2) तथा नियम 6(4) के अनुसार पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया । निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के एकमात्र निम्नलिखित उत्पादक/निर्यातक से प्राप्त हुआ है :

क. गुईलिन रबड़ मशीनरी लि., चीन जन.गण.

- (iv) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें नियम 6(4) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी । आयातक प्रश्नावली का उत्तर भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों से प्राप्त हुआ है :

क. जे.के.टायर्स लि.

ख. अपोलो टायर्स लि.

- (v) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण एक सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- (vi) जिन अन्य निर्यातकों, उत्पादकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों ने इस जांच में सूचना नहीं दी है, उन्हें असहयोगी हितबद्ध पार्टियां माना गया है ।
- (vii) चीन जन.गण. के सभी ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार (एमईटी) की प्रश्नावली भेजी गई थी । यद्यपि, चीन जन.गण. में सामान्य

मूल्य पर जांच शुरूआत के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर विचार किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को यह सूचित किया था कि उसका प्रस्ताव यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के मद्देनजर आवेदक के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से यह अनुरोध किया गया था कि वे पैरा-8 के उप पैरा (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सके कि क्या सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जाए।

- (viii) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंड) से जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना से यह पता चलता है कि इसमें संबद्ध वस्तु के आयातों के आंकड़े नहीं हैं अतः आईबीआईएस के आंकड़ों पर इस जांच परिणाम में भरोसा किया गया है।
- (ix) आवेदक तथा अन्य घरेलू उत्पादकों से भी सूचना मांगी गई थी। सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में उत्पादन की इष्टतम लागत तथा संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत पर आधारित क्षतिरहित कीमत की गणना अनंतिम रूप से की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (x) यह जांच 1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 (12 माह) अर्थात् जांच अवधि के लिए की गई है। क्षति विश्लेषण के संबंध में रूझानों की जांच में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006, अप्रैल 2006-मार्च, 2007 की अवधि तथा जांच अवधि शामिल थी।
- (xi) *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ख. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

4. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद "टायर क्यूरिंग प्रेस" है, जिन्हें टायर वल्कनाइजर या टायरों के रबड़ प्रोसेसिंग मशीनों के रूप में भी जाना जाता है। टायर क्यूरिंग प्रेस एक ऐसी मशीन होती है जिसका उपयोग टायर के विनिर्माण के दौरान टायर की क्यूरिंग के लिए किया जाता है। टायर क्यूरिंग प्रेस एक ऐसी मशीन है जिसमें टायरों को अंतिम रूप तथा थ्रेड पैटर्न प्रदान किया जाता है। तप्त सांचों में टायरों को आकार प्रदान किया जाता है और उन्हें वल्कनाइज किया जाता है। सांचों में थ्रेड पैटर्न होते हैं, विनिर्माता की किनारे पर मार्किंग होती है जो कानूनन अपेक्षित होता है। क्यूरिंग के बाद टायरों को सांचों से निकाल लिया जाता है और उन्हें अंतिम रूप में तैयार कर निरीक्षण हेतु ले जाया जाता है।

5. टायर क्यूरिंग प्रेस के आकार का उल्लेख सामान्यतः डोम के आंतरिक व्यास या प्लेटन के व्यास के अनुसार इंचों में किया जाता है। इस प्रकार उस सांचे के अधिकतम आकार का निर्धारण होता है जिसका उपयोग प्रेस में किया जा सकता है। सांचे का व्यास एक निर्णायक मापदंड होता है जिससे किसी टायर के अधिकतम आकार का निर्धारण होता है। जिसकी क्यूरिंग उक्त प्रेस में की जा सकती है। सामान्यतः प्रेस के आकार में जितनी वृद्धि होती है उसमें उतना ही अधिक व्यास के सांचे को समायोजित किया जा सकता है। और इस प्रकार यह अधिक बड़े टायरों को क्योर कर सकता है। टायरों के विभिन्न खंडों के लिए प्रेस के आकारों का व्यापक वर्गीकरण नीचे दर्शाया गया है :

24"-36" - स्कूटर टायर

40"-52" - यात्री कार तथा एलसीवी टायर

55"- 65.5" - ट्रक कार

78" - ट्रैक्टर तथा कृषि उपकरण टायर

85"-185" - ओटीआर टायर (खनन एवं विशेष उपकरण)

वैकल्पिक रूप में इनमें वर्टीकल चक लोडर, सेगमेंटेड मोल्ड ऑपरेटर तथा पोस्ट क्योर इन्फ्लेटर जैसे रूपों को जोड़ा जाता है जिनसे बेहतर उत्पादकता एवं बेहतर उत्पाद हैंडलिंग क्षमता आदि के स्वचालन के रूप में प्रेस को मदद मिलती है जिन्हें ग्राहकों की जरूरत के अनुसार जोड़ा जाता है।

6. टायर क्यूरिंग प्रेसों सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 84 के उपशीर्ष 8477.51, भारतीय व्यापार वर्गीकरण (सुमेलीकृत वस्तु वर्णन एवं कोडिंग प्रणाली पर आधारित) के अंतर्गत 8477.5100 के तहत वर्गीकृत हैं।

7. आवेदक ने दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच ऐसा कोई ज्ञात अंतर नहीं है जिसका कीमत, उपयोग, गुणवत्ता आदि पर कोई प्रभाव पड़ सकता हो। आवेदक ने यह भी दावा किया है कि उनके द्वारा और विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी तथा प्राथमिक उत्पादन प्रक्रिया तुलनीय है; तथा प्रत्येक उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं तथा जरूरतों के आधार पर अपनी उत्पादन प्रक्रिया को परिष्कृत करता है।

8. चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातक गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने अनुरोध किया है कि संबंधित उत्पाद मात्रा के अनुसार उत्पादित उत्पाद नहीं है और इसका उत्पादन विशेष जरूरतों के अनुसार ग्राहक के ऑर्डर के अनुसार किया जाता है। संबंधित उत्पाद के निर्माण को सामान्यतः दो खंडों में विभाजित किया जा सकता है जिसमें से एक इस्पात और तंबा से निर्मित आधारभूत निर्माण है और दूसरा डिजाइन किए गए भाग हैं। एक ही उत्पाद प्रकार के लिए संबंधित उत्पाद के निर्माण समान होते हैं किन्तु अलग-अलग ऑर्डरों के अनुसार संबंधित

उत्पाद के डिजाइनों के भागों जैसे कि इलेक्ट्रिक भाग तथा धातु के भाग में काफी अंतर होता है ।

9. मै. लूथरा एंड लूथरा लॉ आफिसेज ने मैसर्स ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर्स लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से विचाराधीन उत्पाद अथवा समान वस्तु के दायरे के बारे में निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

(क) हालांकि प्रत्येक टायर क्यूरिंग प्रेस का निर्माण एक समान कच्ची सामग्री से किया जाता है, उसमें एक जैसी प्रौद्योगिकी का उपयोग होता है और उसे एक जैसे ग्राहक में वितरित किया जाता है । तथापि, यह माना जाना चाहिए कि अलग-अलग आकारों की प्रेसों और विनिर्देशन "समान" उत्पाद नहीं हैं ।

(ख) प्रेस के सही विनिर्देशन के अनुसार कीमतों में भारी अंतर होता है । प्रत्येक प्रेस का एक अत्यंत विशिष्ट कार्य होता है और एक प्रेस को दूसरे प्रेस के स्थान पर प्रयुक्त नहीं किया जा सकता जो आकार, प्रकार और अनुषंगी सामग्री जैसे समस्त पहलुओं के पूर्णतः समान नहीं होती है ।

(ग) गुणवत्ता, डिलीवरी अनुसूची का पालन करने की टीसीपी विनिर्माता की क्षमता और अपेक्षित विशिष्ट प्रेस के विनिर्माण की उसकी क्षमता भी निर्णायक कारक होते हैं, जो क्रय संबंधी निर्णय में प्रमुख भूमिका निभाते हैं ।

(घ) एलएंडटी तथा अन्य घरेलू विनिर्माताओं को बड़े आकार की प्रेसों का उत्पादन करने की क्षमता की जानकारी नहीं है । वे सामान्यतः 45" से 65.5" के बीच तथा 78" की प्रेसों की सामान्यतः आपूर्ति करते हैं और दुर्लभ मामलों में उन्होंने इससे बड़े आकारों की आपूर्ति की है ।

(ङ) हमारा माननीय डीजीएडी से विनम्र अनुरोध है कि जांच के दायरे को केवल उन्हीं आकारों तक सीमित रखा जाए जिनका उत्पादन आधार वर्ष से जांच अवधि तक एल एंड टी द्वारा किया गया था ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

10. प्राधिकारी ने इस मुद्दे की विस्तार से जांच की है और इस संबंध में यह नोट किया गया है कि प्रेसों के सभी आकारों (चाहे उनका जांच अवधि में आयात किया गया हो अथवा नहीं) का विनिर्माण घरेलू उद्योग की विनिर्माण क्षमता में किया जाता है । आगे यह नोट किया गया है कि प्रेसों के बड़े आकारों के लिए उपलब्ध सुविधा का उपयोग प्रेसों के छोटे आकारों के लिए भी किया जा सकता है । तथापि, तकनीकी जरूरत प्रेस के आकार के अनुसार अलग-अलग होती है । प्रेसों की तुलनीयता के बारे में हितबद्ध पार्टियों द्वारा की गई आपत्ति के संबंध में यह नोट किया गया है कि प्रेसों के सभी आकारों के लिए केवल तकनीकी निर्माण तक विनिर्माण

तुलनीय है और यह एक विक्रेय वस्तु है । तथापि, प्रैस विद्युत पैनलों, न्यूमेटिक पैनल तथा वाल्व बैटरी आदि के बिना अधूरी होती है । ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार प्रैस को वर्टिकल चक लोडर, सेगमेंटेड मोल्ड ऑपरेटर तथा पोस्ट क्योर इन्फ्लेटर आदि जैसी अतिरिक्त विशेषताएं जोड़कर ग्राहकों के अनुकूल बनाई जा सकती है जिससे प्रैस को स्वचालन बेहतर उत्पादकता तथा बेहतर उत्पाद हैंडलिंग क्षमता आदि के रूप में मदद मिलती है ।

11. घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रैसों के समान आकार का उपयोग आयातित उत्पाद के स्थान पर घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित प्रैसों के लिए किया जा सकता है तथा अतिरिक्त विशेषताएं ग्राहकों की वैकल्पिक जरूरत ही होती हैं । अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित प्रैसों संबंध देश से आयातित उत्पाद की "समान वस्तु" हैं । जहां तक उत्पादों के दायरे को जांच अवधि के दौरान आयातित आकारों तक सीमित रखने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रैसों के निर्माण उनके आकार को ध्यान में रखे बिना एक समान सुविधा में किया जा सकता है । यद्यपि उच्च आकार की प्रैसों के लिए उच्चतर तकनीकी कुशलता तथा जानकारी की जरूरत होगी । घरेलू उद्योग के पास सभी प्रकार की प्रैसों और प्रैसों के विभिन्न अंतरों का उत्पादन करने की क्षमता है । अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को केवल जांच अवधि के दौरान आयातित प्रैसों के आकारों तक सीमित करने का कोई कारण नहीं है ।

ग. घरेलू उद्योग तथा आधार

12. यह आवेदन मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई द्वारा दायर किया गया है और आवेदक भारत में संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तु के अन्य उत्पादक हैं अर्थात् मैसर्स देवन मशीन्स प्रा.लि., चेन्नई; मै. ट्राइमैक मशीनरी मैन्यु. प्रा.लि., नवी मुंबई; अल्फ्रेड हर्बर्ट (इंडिया) लि., कोलकाता तथा स्पेसिफिक इंजी. कार्पो. प्रा.लि., नवी मुंबई ।

13. मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्सीसेज में मै. आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से यह अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ता ने टीसीपी विनिर्माण बाजार में अन्य प्रमुख उत्पादकों पर आयातों के प्रभाव का विश्लेषण नहीं किया है ।

14. जांच शुरुआत के बाद आवेदक के अलावा, संबद्ध वस्तु के किसी भी घरेलू उत्पादक ने जांच से संगत कोई सूचना प्रदान नहीं की है ।

15. देश में संबद्ध वस्तु का समस्त ज्ञात उत्पादकों के उत्पादन (आवेदक के अनुमान के अनुसार) को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आवेदक का उत्पादन भारत में

संबद्ध वस्तु के उत्पादन के 50% से अधिक बनता है और वह यह मानते हैं कि इस जांच के प्रयोजनार्थ मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई के पास नियम 5(3) के अनुसार आधार है और वह नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग है।

घ. न्यूनतम सीमाएं

16. प्राधिकारी द्वारा आईबीआईएस से प्राप्त आयात के आंकड़ों और चीन के सहयोगी निर्यातक तथा सहयोगी आयातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात कुल आयात बनते हैं। अतः संबद्ध देश से हुए आयात न्यूनतम स्तर से अधिक हैं।

ड. गोपनीयता

17. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के गोपनीयता के दावों की जांच की है। इस संबंध में ग्राहकों, लागत एवं कीमत के बारे में घरेलू उद्योग के आंकड़ों को गोपनीय रखा गया है। सहयोगी निर्यातक तथा आयातकों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त गोपनीय सूचना को प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ गोपनीय रखा गया है। हितबद्ध पार्टियां इस संबंध में अनुरोध कर सकती हैं।

च. अन्य अनुरोध तथा उठाए गए मुद्दे

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु के एक उत्पादक/निर्यातक ने उपर्युक्त पैरा 3(iv) में दी गई सूची के अनुसार निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। पैरा 3(v) में किए गए उल्लेख के अनुसार भारत में ग्राहकों या आयातकों ने भी निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर दिया है और वर्तमान जांच से संगत सूचना उपलब्ध कराई है।

19. मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफिसेज में मै. आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से इस जांच परिणाम में संगत स्थानों पर जिन अनुरोधों पर कार्रवाई की गई है, उनके अलावा, निम्नलिखित अनुरोध किये हैं:

क. एल एंड टी तथा अन्य घरेलू विनिर्माताओं ने डिलीवरी संबंधी अंतिम तारीखों का पालन नहीं किया है जिससे आयातकों की परियोजना अनुसूची में विलंब हुआ है।

ख. याचिकाकर्ता द्वारा आईबीआईएस के आंकड़ों के अनुसार कथित तौर पर प्रेसों के आयात के बारे में प्रस्तुत आंकड़े आयातकों द्वारा जांच अवधि के दौरान या जांच अवधि से पूर्व किए गए सही-सही आयातों से दूर-दूर तक मेल नहीं खाते हैं। जे.के. द्वारा वर्ष 2004-05 में आयातित 91" की प्रेस तथा अपोलो द्वारा वर्ष 2005-06 में आयातित 48" की प्रेस को छोड़कर आयात के अन्य सभी आंकड़े गलत हैं।

- ग. "भारत में टीसीपी के आयातों" से संबंधित अनुबंध 1.2, "याचिकाकर्ता द्वारा टीसीपी के गंवाए गए आर्डरों" से संबंधित अनुबंध 1.6 के बीच तथा "आईबीआईएस के आयात आंकड़ों" से संबंधित अनुबंध 1.4 में भारी खामी है ।
- घ. गंवाए गए आर्डरों के बारे में आंकड़े बिल्कुल निराधार हैं । गंवाए गए आर्डरों की तथाकथित सूची जिस आधार पर तैयार की गई है, वह तथ्यात्मक नहीं है ।
- ङ. याचिकाकर्ता ने ऐसी कुछ सूचना गोपनीय रखी है जो गोपनीय व्यवहार प्रदान करने की पात्र नहीं है, जैसे कि "गंवाए गए आर्डरों" के बारे में तथाकथित आंकड़े एवं विस्तार योजनाओं के बारे में याचिकाकर्ता की सूचना ।
- च. सार्वजनिक सूचीबद्ध कंपनी होने के कारण एल एंड टी के लिए अपनी विस्तार योजनाओं से संबंधित सूचना का प्रकटन जनता और निवेशकों को करना अपेक्षित है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

20. क्षति के बारे में हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति विश्लेषण घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों के आधार पर किया गया है । अन्य मुद्दों पर इस जांच परिणाम के संगत भाग में विचार किया गया है ।

छ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

छ.1 बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

21. जांच की शुरुआत के चरण पर प्राधिकारी ने किसी पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में मानते हुए कार्रवाई की थी । जांच शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने उक्त देश में उत्पादकों/निर्यातकों को जांच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर देने और उनके बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण से संगत सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी थी ।

22. प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(3) में निर्धारित मानदंडों के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का खंडन करने के लिए सभी ज्ञात निर्यातकों को एमईटी प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं । प्राधिकारी ने चीन की सरकार से यह भी अनुरोध किया था कि वह अपने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को सूचना प्रदान करने की सलाह दें ।

23. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैराग्राफ, अनुबंध 1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य

उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सके कि क्या :

(क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविद्धि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविद्धियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

(ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;

(ग) इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और

(घ) विनिमय दर का परिवर्तन व्याज की दर पर किया जाता है।

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के एक उत्पादक/निर्यातक मै. गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन करने के लिए निर्धारित प्रपत्र में सूचना प्रस्तुत की है।

25. उत्तर से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मै. गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी (गुईलिन), चायना नेशनल कैमिकल एक्यूपमेंट कार्पो. की सहायक कंपनी है और इसके प्रबंधन का चयन चायना नेशनल कैमिकल एक्वूपमेंट कार्पो. द्वारा किया जाता है। यह भी उल्लेख किया गया है कि "गुईलिन" तथा चायना नेशनल कैमिकल एक्वूपमेंट कार्पो. राज्य के अधिदान वाले उद्यम हैं और उनमें निदेशक मंडल अथवा "गुईलिन" के लिए शेयरधारक मंडल नहीं है। "गुईलिन" का विधिक प्रतिनिधि फैक्टरी निदेशक है जिसकी नियुक्ति चायना नेशनल कैमिकल एक्वूपमेंट कार्पो. द्वारा की जाती है।

26. उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि "गुइलिन" राज्य के स्वामित्व वाला एक उद्यम है और निर्णायक कारोबारी निर्णय के बारे में राज्य के पर्याप्त हस्तक्षेप से इंकार करना संभव नहीं है। अतः प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं कर रहे हैं। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणाम की अधिसूचना के बाद इस मामले की आगे विस्तार से जांच की जाएगी।

छ.3 चीन के लिए सामान्य मूल्य

27. जैसा कि पूर्व में रिकार्ड किया गया है कि प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ गुइलिन को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं किया गया है। अतः प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य की अनंतिम रूप से गणना की है।

28. इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उपबंधित है कि:

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।

29. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह सूचित किया गया था कि घरेलू उद्योग ने उपर्युक्त उपबंध के अनुसार चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भारत का प्रतिनिधि देश के रूप में सुझाव दिया है। तथापि, इस संबंध में किसी सहयोगी निर्यातक या अन्य हितबद्ध पार्टी ने कोई अनुरोध नहीं किया है।

30. चूंकि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश और ऐसे तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमतों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है अतः प्राधिकारी ने "किसी अन्य उचित आधार" के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

31. सामान्य मूल्य का निर्धारण एक जैसी विशेषताओं वाली उन संबद्ध वस्तु के लिए किया गया है जिनका निर्यात आईबीआईएस के आंकड़ों में उपलब्ध सूचना के अनुसार जीव अवधि के दौरान भारत को किया गया है।

32. अलग-अलग प्रकार की मशीनों के लिए पृथक् रूप से विभिन्न संघटकों हेतु अंतर्राष्ट्रीय कीमत उपलब्ध न होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय कीमत को प्रदर्शित करने हेतु विधिवत समायोजित समस्त प्रमुख निविष्टियों की घरेलू कीमत को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य की गणना की गई है। सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु खपत के मानकों, परिवर्तन लागत तथा घरेलू उद्योग के एसजीए व्यय को स्वीकार किया गया है। 5% का उचित लाभ मार्जिन जोड़ने के बाद परिकलित सामान्य मूल्य निम्नानुसार बनता है :

टीसीपी आकार	सामग्री की लागत (लाख रुपए में)	अन्य विनिर्माण लागत (रुपए)	एसजीए तथा वित्तीय लागत (रुपए)	लाभ मार्जिन 5 % की दर से	परिकलित सामान्य मूल्य (सीएनवी)	40.75 रु./अम. डॉ. की दर से परिवर्तन दर पर सीएनवी
78" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
78" टीसीपी + वीसीएल	***	***	***	***	***	***
91" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
91" टीसीपी + वीसीएल	***	***	***	***	***	***
93" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
93" टीसीपी + वीसीएल	***	***	***	***	***	***
104" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
104" टीसीपी + वीसीएल	***	***	***	***	***	***
78" टीसीपी + वीसीएल कंट्रोल के बिना	***	***	***	***	***	***

छ.4 निर्यात कीमत

33. चीन जन.गण. के निर्यातक गुइलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने जांच अवधि के दौरान किए गए निर्यातों के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। तथापि यह देखा गया था कि "गुइलिन" से भारत को कुछ ऐसे निर्यात हुए थे, जिनका उल्लेख निर्यातक द्वारा प्रकटित निर्यात सौदों में नहीं किया गया था। गुइलिन को निर्यात सौदों में अप्रदर्शित 10 मशीनों के ब्यौरे प्रदान किए गए थे और उनसे टिप्पणियां प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था। यह उत्तर दिया गया था कि गुइलिन ने "जांच अवधि के दौरान भारत को उसके द्वारा पोत लदान की गई बिक्रियों और भारतीय ग्राहकों के साथ प्रत्यक्ष रूप से बातचीत की गई बिक्रियों की सूचना दी है। इनके अलावा गुइलिन ने असंबद्ध व्यापारियों सहित चीन के भीतर बिक्री की है और कभी-कभी चीन के पत्तनों पर भी डिलीवरी की है। गुइलिन के पास ऐसे असंबद्ध व्यापारियों के अंतिम ग्राहक का कोई अंदाजा नहीं है। गुइलिन द्वारा ऐसी बिक्रियों की सूचना घरेलू बिक्री के रूप में दी जाती है क्योंकि वस्तु उसके द्वारा डिलीवर की गई थी अथवा चीन में उसने प्राप्त की थी और उसे चीन, भारत या अन्यत्र स्थान पर अंतिम ग्राहक की कोई जानकारी नहीं है और गुइलिन द्वारा वैट वापसी का कोई दावा नहीं किया गया है अथवा ऐसी बिक्री के संबंध में उसकी प्राप्ति नहीं की है जिसका सत्यापन किया जा सके"। यह भी बताया गया है कि "तथापि गुइलिन द्वारा इस बात पर गौर किया जा रहा है कि क्या वह सूचित घरेलू बिक्री से इस सौदे का पता कर सकते हैं और वह पुनः कुछ दिनों में इसका उत्तर देंगे"। निर्यातक से आगे कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। निर्यातक के परामर्शदाता को स्थिति स्पष्ट करने का अवसर भी प्रदान किया गया था। तथापि, उसने मामले को और आगे स्पष्ट करने के लिए इस अवसर का लाभ नहीं उठाया।

34. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी निर्यातक द्वारा प्रदत्त निर्यात के सौदेवार ब्यौरों पर भरोसा नहीं कर सकते हैं क्योंकि उक्त सूचना में भारत को किए गए निर्यात के समस्त सौदे निहित नहीं हैं। अतः प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ भारत में आईबीआईएस द्वारा सूचित आयात के आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। परिणामतः गुइलिन के लिए अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है। निर्यातक से आगे सूचना/साक्ष्य प्राप्त होने पर प्रारंभिक जांच परिणाम की अधिसूचना के बाद इस मामले की आगे जांच की जाएगी।

35. आयात के आंकड़ों में सूचना सीआईएफ मूल्य के आधार पर प्रदान की गई है। निर्यात सौदों में किए गए व्यय को कारखाना निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु गुइलिन द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर घटा दिया गया है। वैट संबंधी अंतर और बैंक सौदों के संबंध में किसी व्यय का खुलासा नहीं किया गया है। अतः कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए उसे भी समायोजित किया गया है। आयात के आंकड़ों में घोषित उत्पाद विवरण को ध्यान में रखते हुए टीसीपी के आकार के अनुसार कारखाना निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। इस पद्धति द्वारा प्रति टीसीपी कारखाना निर्यात कीमत *** डॉलर (78 इंच), *** डॉलर (91 इंच), *** डॉलर (93 इंच) और *** डॉलर (104 इंच) निर्धारित की गई है।

छ.5 पाटन मार्जिन

36. पाटन मॉर्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अन्तिम रूप से इस प्रकार निर्धारित कारखाना सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत की तुलना व्यापार के समान स्तर पर की गई है और संबद्ध देश के निर्यातकों के लिए पाटन मॉर्जिन का अन्तिम रूप से निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :

	भारत औसत सामान्य मूल्य (अम. डॉ. प्रति मशीन)	भारत औसत निर्यात कीमत (अम. डॉ. प्रति मशीन)	भारत औसत पाटन मॉर्जिन (अम. डॉ. प्रति मशीन)	पाटन मॉर्जिन % की है
चीन जन. गण. के सभी निर्यातक	***	***	***	33.55

ज. क्षति निर्धारण

घरेलू उद्योग के विचार

37. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि उसने चीन जन. गण. से पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है। उसने अनुरोध किया है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। भारतीय बाजार में चीन के आपूर्तिकर्ताओं की सतत उपस्थिति से घरेलू उद्योग न केवल उन आर्डरों, जिनमें चीन के व्यक्ति मौजूद थे, में कीमत में कमी आई है अपितु उन आर्डरों में भी कमी आई है जिनमें चीन के व्यक्ति मौजूद नहीं थे। यह बताया गया है कि इस जैसे किसी घरेलू उद्योग में बाजार में कम कीमत के उत्पाद की मात्रा मौजूदगी से संश्लेषित आपूर्तिकर्ता बिक्री गंवाने के भय से कम कीमतें उद्धृत करने के लिए बाध्य हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप बाजार हिस्से, लाभ, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह के रूप में घरेलू उद्योग का निष्पादन विकृत हुआ है। यद्यपि, उत्पादन तथा बिक्री मात्रा के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है, तथापि संबंधित कीमत के रूप में निष्पादन में गिरावट आई है। इसके अलावा, उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में निष्पादन में सुधार एक आर्थिक परिणाम है जब लाभ एवं निवेश पर आय के रूप में निष्पादन उत्पादन, बिक्री मात्रा के रूप में निष्पादन के अनुरूप नहीं होता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

38. क्षति के खतरे के बारे में निम्नानुसार अनुरोध किया गया है:

(क) आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वस्तुतः लगभग नगण्य से बढ़कर आयात की मात्रा प्रस्तावित जांच अवधि में ही 24 मशीन हो गई है जो भारत में मांग की 08 % बनती है।

- (ख) चीन के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा उद्धृत कीमतें भारतीय उत्पादकों द्वारा उद्धृत कीमतों से काफी कम हैं। टायर उद्योग को उपलब्ध समग्र लागत लाभ के कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समय जिस कीमत पर आयात हो रहे हैं, उससे बाजार में उत्पाद का आगे और आयात करने की मांग में वृद्धि होने की संभावना है।
- (ग) चीन के उत्पादकों के पास पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमताएं हैं। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि चीन के एक उत्पादक ने 64 मशीनों की आपूर्ति का आर्डर प्राप्त किया है जिसकी डिलीवरी अनुसूची 12 माह से कम की थी। कंपनी इस आर्डर को प्राप्त नहीं कर पाती यदि उसके पास ऑर्डर पूरा करने के लिए अप्रयुक्त क्षमताएं नहीं होतीं।

39. आयातकों तथा प्रयोक्ताओं के विचार

मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्रीसेज में मै. आटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में निम्नलिखित अनुरोध किये हैं :

- क. पाटनरोधी नियमावली में पाटनरोधी करार का अनुच्छेद 4.1 पुनः उद्धृत किया गया है और उसमें यह भी अपेक्षित है कि क्षति का निर्धारण घरेलू विनिर्माताओं के "प्रमुख" भाग के लिए किया जाए।
- ख. याचिकाकर्ता ने क्षति के किसी पहलू के बारे में अन्य प्रमुख तथा महत्वपूर्ण उत्पादकों पर आयातों के प्रभाव का विश्लेषण नहीं किया है और उसने अपने आंकड़ों में क्षति का कोई विश्लेषण नहीं किया है जो स्वयं असंगत तथा गलत है।
- ग. व्यापक क्षति विश्लेषण के लिए अपेक्षित है कि आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन कुल घरेलू उत्पादन के एक "बड़े" भाग के लिए किया जाए और याचिकाकर्ता के लिए न केवल कंपनी विशिष्ट आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए अपितु अन्य घरेलू विनिर्माताओं से संबंधित आंकड़ों को भी ध्यान में रखते हुए क्षति संबंधी कोई विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। याचिकाकर्ता द्वारा किया गया वर्तमान क्षति विश्लेषण अपूर्ण तथा समूचे घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव के विश्लेषण की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है और इस वजह से डीजीएडी द्वारा उसे अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए।
- घ. याचिकाकर्ता ने केवल पाटनरोधी कार्यवाही के प्रयोजनार्थ आयात आंकड़ों में उल्लिखित मात्रा एवं मूल्य के अंकों में हेराफेरी की है।
- ड. कुल वेतन एवं मजदूरी से संबंधित सूचीबद्ध आंकड़ों के बारे में IV-क में त्रुटि है।

- घ. याधिकाकर्ता ने डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार तथा भारतीय पाटनरोधी नियमावली का उल्लंघन करते हुए जांच अवधि के लिए क्षति विश्लेषण करने में जांच अवधि के दौरान भारतीयों द्वारा प्रस्तुत और सुपुर्व चीन की प्रेशों के लिए मानी गई बिक्री/आर्डरों को शामिल करने की कोशिश की है ।
- छ. माननीय डीजीएडी द्वारा गंवाए गए आर्डरों के रूप में याधिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत अपुष्टिकृत आंकड़ों को अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए ।
- ज. एल एंड टी के आंकड़ों के आधार पर एल एंड टी ने अधिकांश क्षति मापदंडों के संबंध में कोई क्षति या नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित नहीं की है । एल एंड टी की खुद की स्वीकारोक्ति के अनुसार समस्त क्षति मापदंड के अनुसार वर्ष दर वर्ष सकारात्मक वृद्धि हुई है ।
- झ. एल एंड टी आरोपित पाटन तथा जांच अवधि के दौरान उसे हुई क्षति के बीच "कारणात्मक संबंध" स्थापित करने में असमर्थ रहा है ।
- ञ. टीसीपी की क्षमता, क्षमता उपयोग, उत्पादन एवं बिक्री में सतत वृद्धि से इस निष्कर्ष को बल नहीं मिलता है कि भारत में टीसीपी की क्षमता, क्षमता उपयोग, उत्पादन या बिक्री में गिरावट आई है या गिरावट आने की संभावना है ।
- ट. सभी तीन निर्णायक कारकों अर्थात् घरेलू उत्पादन, घरेलू बिक्री तथा घरेलू बिक्री प्राप्ति में वृद्धि हुई है और यह वृद्धि मामूली या नगण्य नहीं है बल्कि इससे किसी अन्य अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान कंपनी की व्यापक वृद्धि का पता चलता है ।
- ठ. कंपनी ने अधिक उत्पादन, अधिक बिक्री की है, घरेलू बाजार में बड़ी मात्रा में निर्यात बिक्री की है और जांच अवधि के दौरान उच्चतम घरेलू बिक्री राजस्व अर्जित किया है । इसे भी डीजीएडी के समक्ष क्षति अर्थात् उत्पादन, बिक्री तथा बिक्री प्राप्ति में वास्तविक या संभावित गिरावट जैसे क्षति के सर्वप्रथम एवं अग्रणीय संकेतकों के रूप में जांच के निर्धारण हेतु एक आधार होना चाहिए जिसे एल एंड टी ने सिद्ध नहीं किया है ।
- ड. अन्य घरेलू उत्पादकों की तुलना में एल एंड टी के बाजार हिस्से में भी लगातार वृद्धि हो रही है । घरेलू बिक्री की मात्रा एवं मूल्य दोनों रूपों में एल एंड टी ने बाजार के बड़े हिस्से को अर्जित किया है ।
- ढ. उत्पादकता, रोजगार, वेतन एवं मजदूरी में वृद्धि हुई है जो क्षति के उसके दावे के विपरीत है ।

- ग. माननीय डीजीएडी को लाभ में अधोगामी प्रवृत्ति की जांच करनी चाहिए और याचिकाकर्ता को उस ढंग से प्रकटन करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए जिस ढंग से इस तथ्य के मद्देनजर विशेष तौर लाभों की गणना की गई है कि बिक्री, उत्पादन तथा बिक्री प्राप्ति से लाभ में इतनी भारी गिरावट को समर्थन नहीं मिलता है ।
- त. याचिकाकर्ता द्वारा शुरू की गई विस्तार परियोजनाएं भी घटे हुए लाभ का एक प्रमुख कारण हैं न कि आयात जैसा कि याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है ।
- थ. जांच अवधि के दौरान लाभ में गिरावट को निर्यात मात्रा तथा निर्यात बिक्री प्राप्ति में गिरावट का एकमात्र कारण माना जा सकता है जिन पर विनिमय दर में घट-बढ़ के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- द. एल एंड टी "पूँजी जुटाने की क्षमता" के कारण हुई क्षति के कारक का विश्लेषण करने में समर्थ नहीं हुआ है । इस प्रकार क्षति विश्लेषण अपूर्ण, त्रुटिपूर्ण एवं मनगढ़ंत है और इसमें क्षति तथा पाटित आयातों के आरोपों के बारे में किसी साक्ष्य का अभाव है ।
- ध. एल एंड टी ने इस बात की जांच नहीं की है कि क्या कीमत ह्रास या न्यूनीकरण हुआ है । डीजीएडी को "समान उत्पादों" का कीमत विश्लेषण करना चाहिए और पर्याप्त कीमत कटौती, कीमत ह्रास या न्यूनीकरण होने की स्थिति में ही क्षति पाई जानी चाहिए ।
- न. याचिकाकर्ता ने पाटनरोधी नियमों में यथापेक्षित विभिन्न आर्थिक मापदंडों के आधार पर ऋणात्मक परिणाम प्रदर्शित करने की अपनी क्षमता के मद्देनजर "क्षति के खतरे" का झूठा दावा किया है ।
- प. क्षति के प्रतिकूल सकारात्मक वृद्धि हुई है और इस कारण से डीजीएडी को वर्तमान वास्तविक क्षति और वास्तविक क्षति के खतरे दोनों के आधार पर यह जांच समाप्त कर देनी चाहिए ।
- फ. याचिकाकर्ता आयातों एवं लाभ में गिरावट (अन्य कारकों से कोई क्षति नहीं हुई है) के बीच स्पष्ट कारणात्मक संबंध की पुष्टि करने में विफल रहा है और इस कारण से जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए ।
- ब. चीन के निर्यातकों को एमईटी व्यवहार से इंकार किए जाने की स्थिति में एल एंड टी के क्विंगडांग फैक्टरी हेतु लागत संबंधी आंकड़ों का उपयोग प्रतिनिधि मूल्य के प्रयोजनार्थ किया जाना चाहिए ।

म. निर्यात कीमत निकालते समय डीजीएडी को व्यापारियों कमीशन के लिए किसी कटौती की अनुमति दी जानी चाहिए क्योंकि उत्पादों का आयात सीधे किया गया है। जहां तक वैट के लिए कटौती का संबंध है, याचिकाकर्ता को यह सिद्ध करना होता है कि संदर्भाधीन उत्पाद पर वैट वापसी मिलती है।

म. माननीय प्राधिकारी को एल एंड टी पर कम से कम इस बात का प्रकटन करने का दबाव डाला जाना चाहिए कि एल टी एम प्रभाग को आवंटन एवं लागत निर्धारण की पद्धति क्या है ताकि उसकी तार्किकता की जांच की जा सके।

प्राधिकारी द्वारा जांच

40. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति निर्धारण में " ... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातकों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ... " घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संकेत देने वाले कारकों की जांच शामिल होगी। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करना आवश्यक है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

41. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा एवं मार्जिन आदि जैसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों पर उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

क) पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव: आयात की मात्रा एवं बाजार हिस्सा

अ) आयात की मात्रा और संबद्ध देशों का हिस्सा:

42. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

43. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से सौदेवार सूचना प्राप्त की है। आंकड़ों के अबलोकन से यह नोट किया गया कि उक्त आंकड़ों में संगत सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष के अंतर्गत टीसीपी के आयातों के किसी सौदे का उल्लेख नहीं है। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध देश तथा अन्य देशों

से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा की जांच प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस आंकड़ों द्वारा उपलब्ध सौदेवार आयात आंकड़ों के आधार पर की है।

अवधि	2004-05	2005-06	2006-07	मात्रा नग में. जांच अवधि
देश	मात्रा	मात्रा	मात्रा	मात्रा
चीन जन.गण.	1	2	4	24
अन्य	0	0	0	0
प्रवृत्ति	-	-	-	-
कुल	1	2	4	24
संबद्ध देश का हिस्सा	100%	100%	100%	100%

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
आयात	नग	1	2	4	24
भारतीय उत्पादन की मात्रा	मी.ट.	54	109	76	1225
भारतीय उत्पादन की मात्रा	नग	257	316	355	417
भारतीय मांग	मी.ट.	4980	6600	8626	9685
भारतीय मांग	नग	162	204	224	338
भारतीय मांग	मी.ट.	2,386	3,556	5,015	8,006
नग आधार पर भारतीय उत्पादन की तुलना में आयात	%	0.39%	0.63%	1.13%	5.76%
नग आधार पर मांग की तुलना में आयात	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
भारत आधार पर भारतीय उत्पादन की तुलना में आयात	%	1.09%	1.65%	0.88%	12.65%
भारत आधार पर घरेलू खपत की तुलना में आयात	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%

44. आयात के आंकड़े नग इकाई में उपलब्ध कराए गए हैं। गणना के अनुपात के प्रयोजनार्थ मशीनों के आकार के आधार पर इसे भार इकाई में परिवर्तित किया गया है।

45. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। आयात वर्ष 2004-05 में 1 नग से बढ़कर जांच अवधि में 24 नग हो गए हैं। क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों से कोई आयात नहीं हुआ था। जहां तक उत्पादन का संबंध है, आयात नग के रूप में वर्ष 2004-2005 में 0.39% से बढ़कर जांच अवधि में 5.76% हो गए। भार के रूप में यह 1.09% से बढ़कर 12.65%

हो गए । मांग के रूप में यह नग रूप में 0.62% से बढ़कर 7.09% हो गए ; भारत रूप में यह 2.28% से बढ़कर 15.30% हो गए ।

ख) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव:

46. घरेलू उत्पादन की मात्रा एवं घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा घरेलू बिक्री के संबंध में की गई है ।

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
नगों के रूप में					
उत्पादन मात्रा	नग	117	162	183	217
	सूचकांक	100	138	156	185
घरेलू बिक्री मात्रा	नग	59	89	95	150
	सूचकांक	100	151	161	254
भार रूप में					
उत्पादन मात्रा	मी.ट.	3032	4309	6046	6793
	सूचकांक	100	142	199	224
घरेलू बिक्री मात्रा	मी.ट.	1403	2256	3422	4787
	सूचकांक	100	161	244	341

क्षमता उपयोग

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस मामले में टीसीपी निर्माण की क्षमता तकनीकी जनशक्ति, फैब्रिकेशन उपकरण, मैचिंग एवं संयोजनशाला आदि जैसे अनेक कारकों पर निर्भर करती है । उत्पादन उत्पादित मशीन के आकार तथा ग्राहकों की अपेक्षानुसार अतिरिक्त विशेषताओं पर निर्भर करती है । घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि जरूरतों के आधार पर कुछ विनिर्माण प्रक्रियाओं को आउटसोर्स करने की संभावना है अतः क्षमता एवं क्षमता उपयोग का सही-सही मूल्यांकन करना संभव नहीं है ।

48. तथापि, प्राधिकारी ने कंपनी के रिकार्ड के आधार पर समग्र उपकरण क्षमता की जांच की है और यह नोट किया है कि उपकरण उपयोग 70-80% के बीच रहा था । इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा और निवेश करने के बाद उपकरण बढ़ाए गए हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए क्षमता में

आगे और कोई वृद्धि किए बिना मशीनों का विनिर्माण संभव है क्योंकि विनिर्माण क्षमता केवल एक पहलू अर्थात् उपकरण उपयोग के लिए प्रासंगिक नहीं है ।

ग) बाजार हिस्से पर वास्तविक और संभावित प्रभाव:

49. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव और बाजार हिस्से की जांच निम्नानुसार की गई है:

मांग-नग आधार पर		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
घरेलू उद्योग की बिक्री	नग	59	89	95	150
	सूचकांक	100	151	161	254
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	नग	102	113	125	164
	सूचकांक				
चीन से आयात	नग	1	2	4	24
	सूचकांक	100	200	400	2400
मांग	नग	162	113	125	338
	सूचकांक	100	126	138	209
मांग-भार आधार पर					
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	1403	2256	3422	4784
	सूचकांक	100	161	244	341
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	929	1191	1516	1995
	सूचकांक	100	128	163	215
चीन से आयात	मी.ट.	54	109	76	1225
	सूचकांक	100	202	141	2268
मांग	मी.ट.	2386	3556	5015	8006
	सूचकांक	100	149	210	336
नग आधार पर मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	36.47%	43.71%	42.45%	44.33%
	सूचकांक	100	120	116	122
अन्य भारतीय उत्पादक	%	62.91%	55.31%	55.76%	48.58%
	सूचकांक	100	88	89	77
चीन	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
	सूचकांक	100	159	289	1147
भारत आधार पर मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	58.78%	63.44%	68.24%	59.79%
	सूचकांक	100	108	116	102
अन्य भारतीय उत्पादक	%	38.94%	33.49%	30.24%	24.91%

	सूचकांक	100	86	78	64
चीन	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%
	सूचकांक	100	134	67	671

50. घरेलू मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा की गई बिक्री, अन्य उत्पादकों की बिक्री (घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत अनुमान) तथा सभी देशों से हुए आयातों को ध्यान में रखकर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में नगों के रूप में 109% की वृद्धि हुई है तथापि भार रूप में मांग में 226% की वृद्धि हुई है।

उत्पादन

51. आकड़ों से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि नगों के रूप में उत्पादन में 85% की वृद्धि हुई है; तथापि, भार रूप में उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 124% की वृद्धि हुई है।

बिक्री

52. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में नग के रूप में 154% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान भार रूप में बिक्री में 241% की वृद्धि हुई है ॥

53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों में समग्र रूप में वृद्धि होने के कारण आयातों का हिस्सा मात्रा के रूप में 0.6% से बढ़कर 7% हो गया और भार रूप में यह 2% से बढ़कर 15% हो गया।

54. घरेलू उद्योग ने मांग में हिस्सा 36.47% से बढ़ाकर 44.33% कर लिया जबकि नगों के रूप में अन्य उत्पादकों का हिस्सा 62.91% से घटकर 48.58% हो गया। भार रूप में घरेलू उद्योग का हिस्सा 58.78% से बढ़कर 59.79% हो गया जबकि अन्य भारतीय उत्पादकों का हिस्सा 38.94% से घटकर 24.91% हो गया। संबद्ध देश का हिस्सा वर्ष 2004-05 में .62% से बढ़कर नग रूप में जांच अवधि के दौरान 7.09% हो गया जबकि भार रूप में यह 2.28% से बढ़कर 15.3% हो गया।

ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

55. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से

कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती ।

i) कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

56. कीमत कटौती का निर्धारण करने के लिए एक समान आकार की प्रैसों की तुलना करते हुए तुलना की गई है । इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क को संबद्ध देश से आयात कीमत के बारे में आईबीआईएस आंकड़ों में सूचित मूल्य में जोड़कर की गई है ।

57. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित रिबेट, छूट तथा कमीशन और संदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में छूट दी गई है ।

58. जांच अवधि के दौरान आयातित मशीनों के आकार की तुलना करते समय कीमत कटौती का निर्धारण किया गया है । भारत औसत कीमत कटौती निम्नानुसार है :

कीमत कटौती

निम्नलिखित व्यास आकार वाली टीसीपी	निवल बिक्री कीमत- घरेलू (रु./नग)	पहुंच मूल्य (चीन जन.गण)	कीमत कटौती (रु./नग)	कीमत कटौती (%)
78" टीसीपी+वीसीएल कंट्रोल के बिना	***	5810501	***	***
91"	***	7840805	***	***
93"	***	8760739	***	***
104"	***	11382027	***	***
कीमत कटौती सीमा % में				5-20%

59. कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण संबद्ध देश से मशीन के आकार के आयातों की भारत औसत पहुंच कीमत की तुलना उसी आकार की मशीनों की क्षतिरहित बिक्री कीमत तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अतिरिक्त विशेषताओं वाली मशीन के साथ तुलना करने के बाद किया गया है । भारत औसत कम कीमत पर बिक्री निम्नानुसार रही है :

कम कीमत पर बिक्री

निम्नलिखित व्यास आकारक्षति रहित वाली टीसीपी	क्षति रहित कीमत(रु./नग)	पहुंच मूल्य (चीन जन.गण)	कम कीमत पर बिक्री (रु./नग)	कम कीमत पर बिक्री (%)
78" टीसीपी+वीसीएल कंट्रोल के बिना	***	5810501	***	***
91"	***	7840805	***	***
93"	***	8760739	***	***
104"	***	11382027	***	***
कम कीमत पर बिक्री % में				15-20%

60. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि पाटित आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम था और कीमत कटौती प्रेस के आकार के अनुसार घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के 5-20% के बीच थी। पहुंच मूल्य भी प्रेसों के तुलनीय आकारों की क्षतिरहित कीमत से कम रहा था जिसके परिणामस्वरूप कम कीमत पर बिक्री 15-20% के बीच रही थी।

ii) पाटित आयातों का कीमत ह्रासकारी तथा न्यूनकारी प्रभाव:

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि	2004-05 की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि
बिक्री लागत	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	191	190	321	221%
बिक्री कीमत	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	137	155	256	156%

61. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में 121% की वृद्धि हुई है। रुपए के रुप में लागत में 7532 लाख रुपए की वृद्धि हुई है और तदनुरूपी बिक्री मूल्य में रुपए के रुप में 56% की वृद्धि हुई है। इसमें 6871 लाख रुपए की वृद्धि हुई है।

इससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुपात में बिक्री मूल्य में वृद्धि नहीं कर सका जिससे कीमत हास का पता चलता है ।

क्षति के अन्य कारकों की जांच

62. पूर्ववर्ती खंड में मात्रा एवं कीमत प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने क्षति के अन्य अनिवार्य मापदंडों की जांच निम्नानुसार की है :

क) लाभ/हानि तथा निवेश पर आय

63. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को हुए लाभ का ब्यौरा निम्नानुसार है : -

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
बिक्री की घरेलू लागत	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	191	190	321
घरेलू बिक्री मूल्य	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	137	155	256
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-44	35	34
ब्याज	लाख रुपए	***	***	***	***
कर एवं ब्याज पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-38	38	38
घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई पूंजी					
निवल नियत परिसंपत्तियां	लाख रुपए	***	***	***	***
निवल कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई कुल पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-28	16	9

जांच अवधि के दौरान अभिवृद्धियों के बिना लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-28	16	10

64. निम्न नियत परिसंपत्तियों और कार्यशील पूंजी में वृद्धि के कारण आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी में वृद्धि हुई है। एनएफए में वृद्धि के प्रभाव को कम करने के लिए उसे लगाई गई पूंजी पर आय की गणना करने के लिए घटाया गया है।

65. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री प्राप्ति में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप नहीं हुई है। क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ (पीबीआईटी) में गिरावट आई है। आधार वर्ष के 100 (सूचीबद्ध) की तुलना में यह जांच अवधि में घटकर 38 हो गया है। परिणामतः आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई पूंजी पर आय में पर्याप्त गिरावट आई है और जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को आधार वर्ष के 100 की तुलना में केवल 9 (सूचीबद्ध) की बिक्री पर आय हुई है।

ख) नकद प्रवाह

66. संबद्ध वस्तु के लिए नकद प्रवाह की गणना विचाराधीन उत्पाद के लिए अलग-अलग की गई है। अतः क्षति अवधि की तुलना में संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग का नकद लाभ निम्नानुसार दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री पर मूल्यहास	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री के लिए नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-33	41	45

67. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभ में पर्याप्त गिरावट आई है।

ग) रोजगार एवं मजदूरी

68. कर्मचारियों की संख्या और प्रदत्त मजदूरी से यह पता चलता है कि रोजगार में वृद्धि हुई है । आधार वर्ष की तुलना में मजदूरी में भी वृद्धि हुई है ।

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
रोजगार	नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	107	125	133
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	132	133	174
प्रति कर्मचारी औसत मजदूरी	रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	122	107	131

घ) मालसूचियां

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में उत्पाद की मालसूची कोई उचित मापदंड नहीं है क्योंकि वस्तु का उत्पादन ग्राहक के विशिष्ट आर्डर पर किया जाता है ।

ड) ऑर्डर गंवाना

70. घरेलू उद्योग ने यह आरोप लगाया है कि उन्होंने ऑर्डर गंवाए हैं । यह मामला जांचाधीन है । तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अवलोकन से यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य में दम प्रतीत होता है क्योंकि एक खास क्रेता के साथ प्रैस के विशेष आकार के बारे में बातचीत की परिणति चीन जन.गण. से आयात के रूप में हुई है ।

च) उत्पादकता

71. घरेलू उद्योग द्वारा अलग-अलग आकार और प्रकार की संबद्ध मशीनों का उत्पादन किया जाता है और श्रम घंटों की जरूरत आकार दर आकार और प्रकार दर प्रकार अलग-अलग होती है । अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिदिन या कर्मचारी उत्पादकता वर्तमान मामले में उचित मापदंड नहीं है ।

(छ) वृद्धि

72. घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन की समग्र मात्रा और बिक्री के रूप में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित की है। तथापि, निवेश पर आय एवं नकद प्रवाह सहित लाभप्रदता के रूप में जांच किए जाने पर यह वृद्धि नकारात्मक है।

ज) नया निवेश जुटाने की क्षमता

73. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की घरेलू मांग में बेहतर वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग ने उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि के मद्देनजर जांच अवधि के दौरान विस्तार हेतु नया पूंजीनिवेश किया है।

झ) पाटन मात्रा

74. संबद्ध देश और आवेदक निर्यातक के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक है।

अ.) कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

75. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई है जबकि बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री लागत के अनुपात में नहीं हुई है। समूची क्षति अवधि के दौरान आयातों द्वारा बिक्री कीमत में कटौती जारी रही है। यह भी नोट किया गया है मूल सीमाशुल्क भी वर्ष 2004-05 में 20% से घटकर जांच अवधि में 7.5% हो गया है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

76. नगों के रूप में वस्तु की मांग आधार वर्ष में 162 से बढ़कर जांच अवधि में 338 हो गई है अर्थात् 109% की वृद्धि हुई है। भार रूप में भी इसमें 236% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान घरेलू बिक्री में 154% की वृद्धि हुई है। जैसा कि पूर्व में नोट किया गया है, उपकरण का उपयोग 70-80% के बीच रहा है। अतः घरेलू उद्योग ने बाजार में मांग में हुई वृद्धि का लगातार लाभ उठाया है। तथापि, घरेलू उद्योग के आर्डर चीन के विनिर्माताओं के पास चले गए हैं। कीमत कटौती 5-20% के बीच रही है। बिक्री लागत में 221% की वृद्धि हुई और मूल्य के रूप में इसमें 7534 लाख रुपये की वृद्धि हुई जबकि बिक्री मूल्य में 157% की वृद्धि हुई और मूल्य के रूप में इसमें 6871 लाख रुपये की वृद्धि हुई। परिणामतः लाभ (पीबीआईटी) आधार वर्ष के 100 की तुलना में घटकर 38 (सूचीबद्ध) हो गया। इसी प्रकार निवेश पर आय आधार वर्ष में 100 की तुलना में तेजी से घटकर जांच अवधि में 9 (सूचीबद्ध) हो गया।

77. उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग मात्रा एवं मूल्य दोनों रूप में बिक्री बढ़ाने की स्थिति में था, तथापि लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है।

78. प्राधिकारी ने नोट किया है कि उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग निष्पादन में सुधार प्रदर्शित करने में समर्थ रहा है। तथापि, लाभ एवं निवेश पर आय के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री के लिए मार्जिन में गिरावट आई जिससे घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति का पता चलता है।

झ. कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

79. घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत ह्रासकारी और न्यूनकारी प्रभाव के संबंध में पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति और उनके मात्रा एवं कीमत प्रभाव की मौजूदगी की जांच करने के बाद भारतीय नियमावली तथा पाटनरोधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मापदंडों की जांच की गई है ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि क्या पाटित आयातों से भिन्न किसी अन्य कारक से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। तदनुसार निम्नलिखित मापदंडों की जांच की गई है :

i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

आईबीआईएस के आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु का आयात जांचाधीन देशों से भिन्न देशों से नहीं किया जा रहा है। अतः अन्य देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू बाजार में कीमत प्रभावित नहीं होती है ;

ii) मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में बेहतर वृद्धि प्रदर्शित हुई है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का देश में मांग में अभाव से कोई लेना-देना नहीं है। खपत एवं मांग से संबंधित आंकड़ों से उत्पाद की खपत की पद्धति में किसी परिवर्तन का पता नहीं चलता है।

iii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

यह वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है। आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक है और उसका घरेलू उत्पादन तथा बिक्री में पर्याप्त हिस्सा बनता है। प्राधिकारी की जानकारी में प्रतिस्पर्धा अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार की स्थितियों का कोई अन्य साक्ष्य नहीं आया है।

iv) प्रौद्योगिकी विकास

प्रौद्योगिकी में पर्याप्त परिवर्तन का ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया गया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

v) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

प्रधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री काफी अधिक रही है। उत्पादन एवं क्षमता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा अपने निष्पादन में सुधार किया जा रहा है क्योंकि समग्र उपकरण उपयोग 80% के आसपास रहा था। तथापि, वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण केवल घरेलू बिक्री के लिए किया गया है। इस प्रकार निर्यात निष्पादन के कारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री पर क्षतिकारी प्रभाव नहीं पड़ा है। अतः निर्यात निष्पादन पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारक के रूप में विचार नहीं किया जा सकता।

निर्यात	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जाच अवधि
निर्यात बिक्री	नग	54	79	85	70
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	146	157	130

vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

कुल उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है अतः इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।

80. उपर्युक्त कारणोत्तर विश्लेषण से यह पता चलता है कि पाटित आयातों से इतर किसी अन्य ज्ञात कारक से घरेलू उद्योग प्रभावित हुआ प्रतीत नहीं होता है।

कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

81. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन के विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है। अतः पाटित आयातों एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि निम्नलिखित आधारों पर की जाती है :

क. क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक कम कीमतों पर तेजी से वृद्धि हुई है जिससे पर्याप्त कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमत नहीं बढ़ा सका जिससे वित्तीय घाटा हुआ।

ख. आयात की मात्रा में वृद्धि और घरेलू कीमत में ह्रास के कारण कंपनी के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

ग. अत्यधिक सकारात्मक कीमत कटौती से संबद्ध देश से हुए आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई । ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमत का हास कर आयात कीमत में आई गिरावट का सामना किया है जिससे वितीय घाटा हुआ है ।

82. अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

83. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अलग-अलग प्रकार की टीसीपी की क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देश से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । संबद्ध देश के निर्यातकों की भारत औसत पहुंच कीमत और उनके क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :

	क्षति मार्जिन
चीन जन.गण. से सभी निर्यातक	***

अ. निष्कर्ष

84. हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों तथा इस जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- (i) संबद्ध देश से भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु ने निर्यातक देश के घरेलू बाजार में उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर प्रवेश किया है ;
- (ii) संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम सीमा से ज्यादा है
- (iii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को यह क्षति संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मूल्य एवं मात्रात्मक प्रभाव दोनों की वजह से हुई है ।

ट. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

85. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ठ. सिफारिशें

86. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पार्टियों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विभिन्न पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों के बारे में जांच शुरू करने और प्रारंभिक जांच करने के बाद तथा संबद्ध देश के खिलाफ सकारात्मक पाटन मार्जिन की अनंतिम रूप से पुष्टि एवं ऐसे पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि जांच पूरी होने तक पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए उपाय लागू करना अपेक्षित है।

87. अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रपत्र और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हैं।

88. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि उत्पाद की क्षमता और कीमत के संबंध में पर्याप्त अंतर है अतः संदर्भ कीमत या निर्धारित शुल्क के रूप में अनंतिम शुल्क इस मामले में उचित होगा। अतः प्राधिकारी संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में निकाले जाने वाले मूल्यानुसार शुल्क के रूप में अनंतिम उपाय को लागू करने की सिफारिश करते हैं। तदनुसार चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित सभी प्रकार की टायर क्यूरिंग प्रेसों के आयात पर इस जांच परिणाम के जारी होने की तारीख से शुल्क तालिका के कालम 9 में उल्लिखित प्रतिशत को लागू कर निकाली गई राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	सीआईएफ मूल्य का %
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	15
2	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	15
3	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	15

ड. आगे की प्रक्रिया

89. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

- (क). प्राधिकारी समस्त हितबद्ध पार्टियों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;
- (ख). प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, और संबंधित समझी जाने वाली ज्ञात अन्य हितबद्ध पार्टियों को अलग से लिखा जा रहा है, जो इस परिणाम के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इस जांच परिणाम के प्रकाशन की तारीख से चालीस (40) दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है;
- (ग). प्राधिकारी द्वारा आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे और सत्यापन किया जाएगा;
- (घ). विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के विचारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी सुनवाई आयोजित करेंगे।
- (ड). प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणाम घोषित करने से पूर्व अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन किया जाएगा।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th March, 2009

Preliminary Findings

Sub: Anti-Dumping Investigation involving Import of "Tyre Curing Presses" also known as Tyre Vulcanisers or Rubber Processing Machineries for tyres from China PR.

F. No. 14/22/2007-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

1. WHEREAS M/s Larsen and Toubro Limited, Chennai, Tamil Nadu, (herein after referred to as the applicant) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of all kinds of tyre curing presses, used for curing tyres during manufacturing of a tyres (hereinafter referred to as the subject goods), originating in or exported from the China PR (herein after also referred to as subject country) and requested for initiation of an investigation for levy of anti dumping duties on the subject goods. The subject country was informed about receipt of application in accordance with the Rule 5(5).

2. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued a public notice dated 16th October 2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. Procedure

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority.

- (i) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2).
- (ii) The Authority provided copies of the non confidential version of the application to the known exporters and the Embassies of subject country in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- (iii) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporters (whose names and addresses were available with the authority) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rules 6(2) & 6(4). Response to exporter's questionnaire has been received from the following only one producer/ exporter of the subject goods from the subject country:
 - a. Guilin Rubber Machinery Ltd., China PR
- (iv) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose names and addresses were available with the authority) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4). Responses to the Importer's questionnaire have been received from the following importers of the subject goods in India:
 - a. J.K. Tyres Ltd.
 - b. Appolo Tyres Ltd.
- (v) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- (vi) Other exporters, producers and other interested parties who have not supplied information in this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- (vii) x) A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters and Embassy of China PR. While for the purpose of initiation the normal value in China PR was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR, the Authority informed known exporters that it proposes to examine the claim of the applicant in the light of para 7 and para 8 of

Annexure I of Anti Dumping Rules, as amended. The exporters/producers of the subject goods from China PR was therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers.

- (viii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations. The information received from DGCI&S shows that it had not captured the imports of the subject goods, therefore data from IBIS has been relied upon in the findings.
- (ix) Information was sought from the applicant and other domestic producers also The Non-injurious Price based on the optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out provisionally so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- (x) Investigation has been carried out for the period starting from 1st April 2007 to 31st March 2008 (12 months) i.e. the period of investigation (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2004 - March 2005, April 2005 - March 2006, April 2006 - March 2007 and the POI.
- (i) xviii) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. Product under Consideration and Like Article

4. The product under consideration in the present petition is "Tyre Curing Presses" also known as Tyre Vulcanisers or Rubber Processing Machineries for tyres. Tyre Curing Press is a machine used for curing tyre during manufacturing of a tyre. Tyre curing press is a machine where tyres get their final shape and tread pattern. Hot molds shape and vulcanize the tyres. The molds are engraved with the tread pattern, the sidewall markings of the manufacturer and those required by law. After curing, the tyres are removed from their molds and taken to final finish and inspection.

5. The size of the Tyre Curing Press is normally indicated in inches by the internal diameter of the Dome or the diameter of the platen. This in turn determines the maximum size of the mold that can be used in the press. The mold diameter is the critical parameter that determines the maximum size of a tyre that can be cured in that press. Generally as the press size increases it can accommodate a bigger diameter mold and hence it can cure bigger tyres. The broad classification of press sizes for various tyre segments are as shown below:

24"-36" – Scooter tyres

40" -52" – Passenger car and LCV tyres

55"- 65.5" – Truck tyres

78" – Tractor and agricultural equipment tyres

85"-185" – OTR tyres (Mining and special equipment)

Optional Add ons such as vertical chuck loader, segmented mould operator and post cure inflators which help the press in terms of automation better productivity and, better product handling capacity etc. are added depending upon the requirement of the customers.

6. Tyre Curing Presses is classified under Chapter 84 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 8477.51 under subheading 8477.5100 under the Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system).

7. The applicant has claimed that there is no known difference between the products manufactured by them and the subject goods imported from the subject country, which can have any impact on price, usage, quality etc. The applicant also claims that the technology and primary production process employed by them and the foreign producers are comparable; however, every producer fine-tunes its production process based on available facilities and necessities.

8. Guilin Rubber Machinery Factory, co-operating exporter from China PR, has submitted that the product concerned is not a kind of volume-produced product, and is produced according to the order of client with special requirements. The construction of product concerned can normally be divided into two segments, one is the basic construction mainly made of steel and copper and the other is the designed parts. For same product type, the basic constructions of product concerned are same, but the designed parts such as electric parts and metal parts of the product concerned are highly different according to different orders.

9. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. made the following argument on the scope of product under consideration or like article:

- a) While every tyre curing press is made of the same raw materials, uses similar technology and is distributed to the same set of customer, it should be understood that presses of different sizes and specification are not "like" products.
- b) Prices differ greatly depending on the exact specification of the press. Each press is ordered for a very specific function and one press cannot be replaced by another that is not exactly alike in all respects such as the size, type or accessories.
- c) The quality, the ability of a TCP manufacturer to honour delivery schedules and its ability to even manufacture the specific press required are critical deciding factors that play a major role in the purchasing decisions.
- d) L&T and other domestic manufacturers are not known to have the capability to produce presses of a larger size. They generally supplied presses in the range of 45" to 65.5" and upto 78" presses and in the rare instance they have supplied presses above these sizes.
- e) We strongly urge the Hon'ble DGAD to limit the scope of this investigation to only those sizes that were produced by L&T from the base year to the POI.

Examination by the Authority

10. The authority examined the issue in details and in this regard it has been noted that all sizes of presses (whether or not imported during POI) are manufactured in the manufacturing facility of the domestic industry. It has been further noted that facility available for bigger sizes of presses can also be used for smaller sizes of presses. The technical requirement however differs depending upon the size of press. Regarding objection of the interested parties about comparability of presses, it has been noted that for all sizes of presses, manufacturing is comparable upto bare mechanical construction and it is a salable commodity. The press is however incomplete without electrical panels, the pneumatic panel and valve battery, etc. Depending upon the requirement of the customers, the press can be customised by adding extra features such as vertical chuck loaders segmented mould operator and post cure inflators, etc. which help the press in terms of automation better productivity and better product handling capacity etc.

11. In view of the submissions made by the domestic industry and other interested parties, the authority notes that for same size of presses imported product can be substituted with the presses manufactured by the domestic industry as add ons features are only optional requirement of the customers. Therefore the authority holds that the presses made by domestic industry is 'like article' of the product imported from the subject countries. Regarding limiting the

scope of products to sizes imported during POI, the Authority notes that the presses can be made in the same facility irrespective of their sizes, though higher sizes presses would require higher technical skills and know-how. The domestic industry has capability to produce all sizes and their variation of presses. Therefore the authority holds that there is no reason to restrict the scope of product under consideration to the sizes of presses imported during POI only.

C. Domestic Industry and Standing

12. The application has been filed by M/s Larsen & Toubro Ltd., Chennai, and the applicant is one of the major producers of the subject goods in India. The Authority notes that there are other producers of the subject goods in India i.e., M/s Devon Machines Pvt. Limited, Chennai; M/s Trimac Machinery Manufacturing Pvt Limited, Navi Mumai; Alfred Herbert (India) Limited, Kolkata and Specific Engineering Corporation Pvt. Limited, Navi mumbai.

13. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. submitted that the Petitioner has not analyzed the impact of the imports on other important producers in the TCP manufacturing market.

14. Subsequent to Initiation, No domestic producer of the subject goods other than the applicant provided any information relevant to the investigation.

15. After taking into account the production of all the known producers (as estimated by the applicant) of the subject goods in the Country, the Authority notes that the applicant commands more than 50% of the production of the subject goods in India and holds that for the purpose of this investigation the applicant M/s Larsen & Toubro Ltd., Chennai commands the standing in terms of Rule 5(3) and constitutes the domestic industry in terms of Rule 2(b).

D. De Minimis Limits

16. As per the import data received by the Authority from IBIS, as well as the data furnished by the cooperating Chinese exporter and co-operating importers, the imports of the subject goods from the subject country constitute total imports. Therefore, the imports from subject country are above the de minimis level.

E. Confidentiality

17. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. In this regard, the data of domestic industry in respect of customers, cost and prices have been kept confidential. The confidential information provided by

co-operating exporter and importers as confidential have been kept confidential for the purpose of preliminary findings. The interested parties may make submissions in this regard.

F. Other submissions and issues raised

18. The Authority notes that the a producer/ exporter of the subject goods in China PR have submitted their responses to the exporter's questionnaire as listed out in para 3(iv) above. The consumers or importers in India as mentioned in para 3(v) have also responded to the Designated Authority and provided the information relevant to the present investigation.

19. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. have made the following submissions other than those dealt with at relevant places in this findings:

- a. L&T and other domestic manufacturers are not meeting delivery deadlines that have caused delays in the project schedule of the Importers.
- b. Data submitted by the petitioner regarding import of presses, allegedly as per IBIS data, does not even remotely match the exact imports made by the importers either during POI or before the POI. Except for the 91" press imported by JK in 2004-05 and 48" imported by Apollo in 2005-06 all other import data is incorrect.
- c. There is major discrepancy between Annexure 1.2 on "Imports of TCP's into India", Annexure 1.6 on "Lost orders of TCPs by Petitioner" and Annexure 1.4 on "IBIS import data".
- d. The data on lost orders is totally baseless. The premises on which the so called list of lost orders has been drawn up is not evident at all.
- e. The Petitioner has kept certain information confidential which does not deserve confidential treatment, such as the data on so-called "lost orders" and the information about the Petitioner on its expansion plans.
- f. Being a public listed company, L&T is required to disclose the information on its expansion plans to the public and investors.

Examination by the Authority

20. Regarding issues raised by interested parties in respect of injury, the Authority notes that injury have been analysed on the basis of verified data of the domestic industry. The other issues have been dealt with in the relevant portion of the findings.

G. Determination of Dumping Margin

G.1 Examination of Market economy claims

21. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country as per para 8(2) of Annexure 1 of the Rules, for purposes of an anti dumping investigation. Upon initiation, the Authority advised the producers/Exporters in the country to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status.

22. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known exporters for rebutting presumption of non market economy in accordance with criteria laid down in para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise producers/exporters in their country to provide information.

23. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporter/producer of the subject goods from People's Republic of China PR are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

24. The Authority notes that M/s Guilin Rubber Machinery Factory, a producer/ exporter of the subject goods from the subject country, has submitted information on prescribed format to rebut non-market economy presumption.

25. The Authority notes from the response that M/s Guilin Rubber Machinery Factory (Guilin) is subsidiary of China National Chemical Equipment Corporation and its management is selected by China National Chemical Equipment Corporation. It has also been stated that 'Guilin' and China National Chemical Equipment Corporation are state contributed enterprises and there is a no Board of Directors and Board of Shareholders for 'Guilin'. The legal representative of 'Guilin' is a factory director who is appointed by China National Chemical Equipment Corporation.

26. In view of the above facts, the Authority notes that 'Guilin' is a state owned enterprise and it is not possible to rule out significant interference by State concerning critical business decisions. Therefore, the Authority is not granting market economy treatment to exporter for the purpose of preliminary findings. However, the matter would be examined in detail further after notification of preliminary findings.

G.3 Normal Value for China PR

27. As recorded earlier, market economy treatment has not been granted to Guilin for the purpose of preliminary findings. Therefore, the authority has provisionally constructed the normal value for China PR on the basis of Para-7 to Annexure-I to the Rules.

28. In this connection Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules provide that:

In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

29. In the Initiation Notification, it was informed that domestic industry has suggested India as surrogate country for determining normal value for China PR

in terms of the above provision. However, no submissions have been made by co-operating exporter or other interested parties in this regard.

30. As no information about prices has been made available in respect of market economy third country and also prices from such third country to other countries, the Authority has therefore determined normal value on basis of 'Any other reasonable basis'.

31. The Normal Value has been constructed for those subject goods with similar features which have been exported to India during POI as per information available in IBIS data.

32. The Normal Value has been constructed taking into account domestic price of all the major inputs duly adjusted to reflect international prices due to non-availability of international price for various components separately for machines for different sizes. Consumption norms, conversion cost, and SGA expenses of the domestic industry have been adopted for determination of the normal value. After adding a reasonable profit margin of 5% constructed normal value works out as under:

TCP Size	Material Cost (Rs. In lacs)	Other manufacturing Cost (Rs.)	SGA Finance cost (Rs.)	& Profit margin @ 5 %	Constructed Normal Value (CNV)	CNV @ Exchange Rate @ Rs. 40.75/US\$ (USD)
78" TCP	***	***	***	***	***	***
78" TCP+VCL	***	***	***	***	***	***
91" TCP	***	***	***	***	***	***
91" TCP+VCL	***	***	***	***	***	***
93" TCP	***	***	***	***	***	***
93" TCP+VCL	***	***	***	***	***	***
104" TCP	***	***	***	***	***	***
104" TCP+VCL	***	***	***	***	***	***
78" TCP+VCL without controls	***	***	***	***	***	***

G.4 Export Price

33. The Guilin Rubber Machinery Factory, the exporter from China PR provided transaction-wise details of exports made during POI. However, it was noticed that some exports were made to India from 'Guilin' which was not reflected in export transactions disclosed by the exporter. Guilin was provided details of 10 machines not reflected in the export transactions and was asked to offer their comments. It was replied that Guilin has "reported its sales shipped by it to India during POI and negotiated directly with Indian customers. Apart from these Guilin has sales within China including also to unrelated traders, sometimes even delivered to China ports. Guilin has no idea of the final customer of such unrelated traders. Guilin reports such sales as its domestic sales since goods were delivered by it or collected from it in China and it has no knowledge of the final customer in China, India or elsewhere and since no VAT refund has been claimed or received by Guilin in respect of such sales as can be verified". It has also been stated that "nonetheless Guilin are looking into it to see if they can identify this transaction from domestic sales reported and will revert it in a couple of days". No further information has been received from the exporter. The consultant of the exporter was also given opportunity to explain the position. However, he did not avail the opportunity to explain the matter further.

34. In view of the above, the Authority cannot rely on the transaction-wise details of export provided by the exporter as the information has not captured all transactions of exports to India. Therefore, for the purpose of preliminary findings, the data of imports as reported in India in IBIS have been relied upon. Consequently, separate dumping margin for Guilin has not been determined. The matter would be further examined after notification of the preliminary findings on receipt of further information/evidence from the exporter.

35. In the imports data, the information has been provided on CIF value basis. The expenses incurred in export transactions have been deducted on the basis of information provided by Guilin to determine the ex-factory export price. No expenses have been disclosed in respect of the VAT differential and the bank transactions. Therefore, the same has also been adjusted to arrive at the ex-factory export price. The ex-factory export price has been determined size-wise of the TCP by taking into account the description of the product disclosed in the imports data. By this methodology, the ex-factory export price per TCP has been determined as \$ *** (78 inches), \$ *** (91 inches), \$ *** (93 inches) and \$ *** (104 inches).

G..5 Dumping Margins

36. For the purpose of determination of dumping margin the ex-works normal value and export prices so determined provisionally have been compared at the

same level of trade and dumping margin has been provisionally determined for the exporters from the subject country as follows:

	Weighted average Normal Value (USD per Machine)	Weighted average Export Price (USD per Machine)	Weighted average dumping margin (USD per Machine)	DM %
All exporters from China PR	***	***	***	33.55

H. INJURY DETERMINATION

Views of domestic industry

37. The domestic industry has claimed that they have suffered material injury as a result of dumping from China PR. They have submitted that the imports of the product under consideration have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India. Imports are undercutting the prices of the domestic industry. Continued presence of the Chinese suppliers in the Indian market forced the domestic industry to reduce its prices not only in those orders where the Chinese were present, but also in those orders where the Chinese suppliers were not present. It has been stated that mere presence of the low priced product in the market in an industry like this would force all the suppliers to quote a lower prices on fears of loss of sales. Performance of the domestic industry deteriorated, as a consequence, in terms of market share, profits, return on investment and cash flow. Even though the performance of the domestic industry improved in terms of production and sales volumes, performance deteriorated in terms of associated prices. Moreover, improvement in performance in terms of production and sales is of economic consequence when the performance in terms of profits and return on investments is not in tandem with the performance in terms of production, and sales volumes. It can thus be concluded that the domestic industry suffered material injury.

38. In respect to threat of injury, it has been submitted the following:

- (a) imports have increased significantly. In fact, from almost negligible¹, the volume of imports increased to 24 machines during the proposed POI itself, representing 08% of demand in India.

- (b) The prices being quoted by the Chinese suppliers are significantly lower than prices being quoted by the Indian Producers. Given the overall cost advantages to the tyre industry, it is evident that the imports are entering at a present that is likely to increase demand for further importation of the product in the market.
- (c) Chinese producers are holding significant unutilized capacities. This is established by the fact one Chinese producer alone has obtained an order for supply of 64 machines where delivery schedule was less than 12 months. The company would not have obtained the order, had it not been having unutilized capacities to execute the order.

39. Views of Importers & Users

M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. have made the following submissions on injury to domestic industry:

- a. The Antidumping Rules reproduce Article 4.1 of the Antidumping Agreement and also require that injury be conducted for the "major" proportion of domestic manufacturers.
- b. The petitioner has not analyzed the impact of the imports on other significant and important producers on any aspect of injury and presented an injury analysis based solely on their own data, which in itself inconsistent and incorrect.
- c. A comprehensive injury analysis requires that impact of imports be evaluated for a "major" proportion of the total domestic production and the Petitioner was required to conduct an injury analysis taking into account not just their company specific data but also data pertaining to the other domestic manufacturers. The present injury analysis by the petitioner amounts to an incomplete and flawed analysis of the impact of imports on the entire domestic industry and for this reason alone should be rejected by the DGAD.
- d. Petitioner has manipulated the volume and value figures of import data just for the purpose of antidumping proceedings.
- e. There is an error in IV-A with respect to indexed data on total salary and wages.
- f. The Petitioner has, in violation of the WTO Agreement on Antidumping and the Indian Antidumping Rules, tried to include supposed sales/orders for Chinese presses placed by Indian and delivered after the POI in conducting the injury analysis for the POI.
- g. The unsubstantiated data submitted by the Petitioner as lost orders should be rejected outright by the Hon'ble DGAD.
- h. Based on L&T's data, L&T shows no injury or negative growth for most of the injury parameters. All injury parameters integral to a showing of

injury have registered positive year to year growth by L&T own admission.

- i. L&T has not been able to establish a "casual link" between the alleged dumping and the supposed injury caused to it during the POI.
- j. The steady increase of capacity, capacity utilization, production and sales of TCPs' does not support a conclusion that there has been or that there is potential for decline in capacity, capacity utilization, production or sales of TCPs in India.
- k. All three critical factors, i.e., domestic production, domestic sales and domestic sales realization have all seen increases, and these increases are not marginal or insignificant but demonstrate the largest increase for the company during the POI compared to any period prior to it.
- l. The company went on to produce more, sell more, divert larger export sales to the domestic market and earn its highest domestic sale revenue during the POI. This in itself should be ground for the DGAD to terminate the investigation as the first and foremost indicators of injury namely actual or potential decline in production, sales and sales realization have not been proved by L&T.
- m. L&T's market share also has been consistently increasing in comparison to other domestic producers. Both in terms of volume as well as value of domestic sales, L&T has secured the monopoly share of the market.
- n. Productivity, employment, salary & wages have increased which is in contradiction to its claim of injury.
- o. The Hon'ble DGAD must investigate the downward trend in profits and the Petitioner must be made to disclose the manner in which profits have been calculated especially in light of the fact that figures on sales, production and sales realization do not support such a drastic fall in profits.
- p. The expansion projects undertaken by the petitioner also are a major cause for reduced profits and not imports as the petitioner is contesting.
- q. The fall in profits during the POI can be solely be attributed to the fall in exports volumes and export sales realization which in themselves have been adversely affected by exchange rate fluctuations.
- r. L&T has not even analysed the factor of injury "Ability to raise capital". Its injury analysis is thus incomplete, flawed, manipulated and severely lacking in any proof injury and alleged dumped imports.
- s. L&T has not examined whether there has been price depression or suppression. DGAD must undertake price nalysis of "like products" and must find injury only if there is significant price undercutting, price depression or suppression.
- t. The Petitioner have raised a false claim of 'threat of injury' in view of its ability to show negative results on various on various economic parameters as required by the Antidumping Rules.

- u. Positive growth in the antithesis of injury and for this reason the DGAD should terminate this investigation both on present material injury basis as well as for threat of material injury.
- v. Petitioner has failed to establish a clear causal link between imports and fall in profits (other factors have not suffered any injury) and for this reason alone, the investigation should be terminated.
- w. In the event MET treatment is denied to the Chinese exporters, then L&T costing data for its Qingdong factory should be used for the purpose of surrogate value.
- x. While arriving at the export price, DGAD should not allow any deduction on account of commission of traders as the products have been imported directly. As regards the deduction on account of VAT, the Petitioner have to establish that product in question gets a VAT refund.
- y. Hon'ble Authority must compel L&T to atleast disclose the method of allocating and apportioning costs to the LTM division so that the reasonableness of the same may be examined.

Examination by the Authority

40. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

41. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.

A) Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market shares

a) Import volumes and share of subject countries:

42. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

43. The Authority received transaction-wise information from DGCI&S. On perusal of the data it was noted that the data has not captured any transaction of TCP imports under relevant custom tariff head. The Authority therefore examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by IBIS data for the purpose of the preliminary determination:

Quantity in Nos.				
Period	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Country	Quantity	Quantity	Quantity	Quantity
CHINA PR	1	2	4	24
Others	0	0	0	0
Trend	-	-	-	-
Total	1	2	4	24
Share of subject country	100%	100%	100%	100%

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Imports	Nos.	1	2	4	24
Imports	MT	54	109	713	1225
Indian Production volumes	Nos.	257	316	355	417
Indian Production volumes	MT	4980	6600	8626	9685
Indian Demand	Nos.	162	204	224	338
Indian Demand	MT	2,386	3,556	5,015	8,006
Imports in relation to Indian production on number basis	%	0.39%	0.63%	1.13%	5.76%
Imports in relation to demand on number basis	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
Imports in relation to Indian production- on wt basis	%	1.09%	1.65%	0.88%	12.65%
Imports in relation to domestic consumption- on wt basis	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%

44. The imports data has provided units in number. The same has been converted into unit of weight depending upon size of machines for the purpose of calculating ratios.

45. The above data indicates that imports of the subject goods from the subject country have increased substantially during the injury examination period. The imports increased from 1 number in 2004-05 to 24 in POI. There was no imports from other countries during the injury period. In relation to production, imports increased, in number, to 5.76% in POI from 0.39% in 2004-05. In terms of weight, it increased from 1.09% to 12.65%. In relation to demand, it increased, in number, from 0.62% to 7.09%; in terms of weight, it increased from 2.28% to 15.30%.

b) Actual and potential effect on production and capacity utilization:

46. The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production, capacity utilization and domestic sales of the domestic industry.

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
In terms of Numbers					
Production volumes	Nos.	117	162	183	217
	Index	100	138	156	185
Domestic sales volumes	Nos.	59	89	95	150
	Index	100	151	161	254
In terms of Weight					
Production volumes	MT	3032	4309	6046	6793
	Index	100	142	199	224
Domestic sales volumes	MT	1403	2256	3422	4787
	Index	100	161	244	341

Capacity Utilization

47. The Authority notes that in this case capacity to manufacture TCP depends on number of factors, such as technical manpower, equipments in fabrication, machining and assembly shops, etc. The actual production may vary

depending on size of machine produced and add on required by customers. It has been stated by the domestic industry that depending upon requirements, it is possible to outsource some manufacturing processes. Therefore, it is not possible to correctly assess capacity and capacity utilization.

48. The Authority, however, has examined the overall equipment efficiency based on records of the company and notes that the equipment utilization was in the range of 70-80%. In this regard, Authority notes that equipments have been added by Domestic Industry by making further investments. The Authority notes that in view of submissions of domestic industry, it is possible to manufacture machines without any further addition of capacity, as the capacity to manufacture is not contingent upon only one aspect, i.e., equipment utilization.

c) Actual and potential effect on market share:

49. Effects of the dumped imports on the domestic sales and market shares have been examined as follows:

Demand – number basis		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales of Domestic industry	Nos.	59	89	95	150
	Index	100	151	161	254
Sale of Other Indian Producers	Nos.	102	113	125	164
	Index				
Imports from China	Nos.	1	2	4	24
	Index	100	200	400	2400
Demand	Nos.	162	113	125	338
	Index	100	126	138	209
Demand – weight basis					
Sales of Domestic industry	MT	1403	2256	3422	4784
	Index	100	161	244	341
Sale of Other Indian Producers	MT	929	1191	1516	1995
	Index	100	128	163	215
Imports from China	MT	54	109	76	1225
	Index	100	202	141	2268
Demand	MT	2386	3556	5015	8006
	Index	100	149	210	336
Market Share in Demand on number basis					
Domestic industry	%	36.47%	43.71%	42.45%	44.33%

	Index	100	120	116	122
Other Indian Producers	%	62.91%	55.31%	55.76%	48.58%
	Index	100	88	89	77
China	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
	Index	100	159	289	1147
Market Share in Demand on Weight basis					
Domestic industry	%	58.78%	63.44%	68.24%	59.79%
	Index	100	108	116	102
Other Indian Producers	%	38.94%	33.49%	30.24%	24.91%
	Index	100	86	78	64
China	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%
	Index	100	134	67	671

50. The domestic demand has been assessed by taking into account sales by domestic industry, sale of other producers (estimate provided by domestic industry) and imports from all countries. The Authority notes that demand has increased by 109% in terms of numbers, however, in terms of weight the demand has increased by 226%.

Production

51. From the data, the Authority notes that the production has increased by 85% in terms of numbers; however, in terms of weight, the production has increased by 124% in POI as compared to base year.

Sales

52. The domestic sales of domestic industry has increased by 154% in terms of numbers from base year to POI. In terms of weight, the sales has increased by 241% during the same period.

53. The Authority notes that with the increase in imports in absolute terms, the share of imports have gone up from just 0.6% to 7% on volume basis and from 2% to 15% on weight basis.

54. The domestic industry has increased the share in demand from 36.47% to 44.33% whereas share of other producers have declined from 62.91% to 48.58% in terms of numbers. In terms of weight, the share of domestic industry has increased from 58.78% to 59.79% whereas the share of other Indian producers declined from 38.94% to 24.91%. The share of the subject country increased

from .62% in 2004-05 to 7.09% in POI in terms of number whereas it increased from 2.28% to 15.3% in terms of weight.

B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

55. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

i) Price undercutting and underselling effects

56. To determine price undercutting, the comparisons have been made by comparing the presses with same size. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data of import prices from the subject country.

57. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

58. Price undercutting has been determined while making comparison of sizes of machines imported during POI. Weighted average price undercutting is as under:

Price undercutting

TCP with dia size	Net Selling price – Domestic* (Rs./No.)	Landed Value (China PR)	Price undercutting (Rs./No)	Price undercutting (%)
78" TCP+VCL W/o Controls	***	5810501	***	***
91"	***	7840805	***	***
93"	***	8760739	***	***
104"	***	11382027	***	***
Price undercutting range in %				5-20%

59. Price underselling has been determined by comparing the weighted average landed price of imports of size of the machine from subject country with the Non-injurious selling price of the same size and add on of machine produced by the domestic industry during the POI. Weighted average price underselling is as under:

Price underselling

TCP with dia size	Non-injurious price (Rs./No.)	Landed Value (Rs./China PR)	Price underselling (Rs./No)	Price underselling (%)
78" TCP+VCL W/o Controls	***	5810501	***	***
91"	***	7840805	***	***
93"	***	8760739	***	***
104"	***	11382027	***	***
Price underselling range in %				15-20%

60. The above data shows that the landed value of the dumped imports is significantly were below the net sales realization of the domestic industry and were undercutting in the range of 5-20% of the selling prices of the domestic industry depending upon the sizes of the press. The landed values were also below the non-injurious prices of comparable sizes of presses, resulting in underselling in the range of 15-20%.

ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI	Increase in POI over 2004-05
Cost of Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	191	190	321	221%
Selling Price	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	137	155	256	156%

61. Cost of sales has increased by 121% in POI as compared to base year. In terms of rupees, cost has increased by Rs. 7532 lacs, corresponding sales value has increased by 56%, in terms of Rs. It increased by Rs. 6871 lacs. This indicates that domestic industry could not increase sales value in proportion to increase in cost indicating the suppression of prices.

Examination of other injury factors

62. After examining volume and price effect in the previous section, the Authority has examined the other mandatory injury parameters as follows:

a) Profits/Loss and Return on investments

63. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows: -

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Domestic Cost of Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	191	190	321
Domestic Sales Value	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	137	155	256
Profit/ Loss before Tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-44	35	34
Interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
Profit/ Loss before Tax & Interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-38	38	38
Capital Employed for domestic sales					
Net Fixed Assets	Rs. Lacs	***	***	***	***
Net Working Capital	Rs. Lacs	***	***	***	***
Total Capital Employed for domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Return on capital employed	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	-28	16	9

Return on capital employed without considering additions during POI	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	-28	16	10

64. The Capital Employed has increased during POI as compared to base year on account of increase in net fixed assets as well as working capital. To discount the effect of increase in NFA, the same has been deducted to calculate the return on capital employed.

65. The above data shows that the domestic sales realization of the domestic industry has not increased in line with the increase in cost of production. The profit (PBIT) of the domestic industry has declined over the injury investigation period. As compared to 100 (indexed) of the base year; it declined to 38 in POI. Consequently, the return on the Capital Employed for domestic sales of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the base year and during the POI the domestic industry had a return on domestic sales of just 9 (indexed) from 100 of the base year.

b) Cash Flow

66. Cash flow for the subject goods have not been worked out separately for the product under consideration. Therefore, cash profits of the domestic industry for the subject goods over the injury period have been shown as under:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Profit/ Loss before Tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Depreciation on Domestic Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Cash profit for domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-33	41	45

67. It is seen from the above that the cash profits of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period.

c) Employment and Wages

68. Number of employees and wages paid indicates that employment has increased. The wages have also increased compared to the base year.

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Employment	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	125	133
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	132	133	174
Average wages per employee	Rs.	***	***	***	***
Trend	Index	100	122	107	131

d) Inventories

69. Authority notes that Inventories of the product are not an appropriate parameter in the present case as the goods are produced against specific customer orders.

e) Loss of orders

70. It has been alleged by the domestic industry that they had lost the orders. The matter is under examination. However, on perusal of the evidence submitted by the domestic industry, it has been noted that there appears to be substance in the evidence submitted by the domestic industry as the negotiation about particular size of press with one particular buyer, later on imported from the China PR.

f) Productivity

71. The domestic industry produces the subject machines of different sizes and types and the requirement of labour hours vary from size to size and type to type. Authority therefore notes that the productivity per day or employee is not an appropriate parameter in the present case.

(g) Growth

72. The domestic industry has shown positive growth in terms of absolute volume of production and sales of the domestic industry over the injury period. However, the growth is negative when examined in terms of profitability, including return on investment and cash flow.

h) Ability to raise fresh Investment

73. The Authority notes that there is a healthy growth in domestic demand for the subject goods and the domestic industry has made fresh capital investments for expansion during the investigation period apparently keeping in view significant growth in demand for the product.

i) Magnitude of Dumping

74. The dumping margin determined for the subject country and the applicant exporter is above de minimis level.

j) Factors affecting prices

75. The cost of sales has increased during POI as compared to the base year whereas the selling price has not increase in proportion to the cost of sales. The undercutting of selling price by imports continued throughout injury period. It has also been noted that the basic custom duty also declined from 20% in 2004-05 to 7.5% in POI.

Conclusion on injury

76. The demand of goods in terms of numbers has increased from 162 in base year to 338 in POI, i.e., increase by 109%. In terms of weight also, it increased by 236%. The domestic sales have increased by 154% during the same period. As noted earlier, the equipment utilization is in the range of 70-80%. Therefore, the domestic industry continues to take advantage of increase in demand in the market. However, the domestic industry has lost orders to Chinese manufacturers. The under-cutting is in the range of 5-20%. The cost of sales increased by 221% and in terms of value by Rs. 7534 lacs, when selling value increased by 157% and in terms of value increased by Rs. 6871 lacs. Consequently, the profit (PBIT) declined to 38(indexed) as compared to 100 of base year. Similarly, the return on investment declined sharply from 100 (indexed) to 9 in POI.

77. The above analysis indicates that though domestic industry was in position to increase sales both in value and volume basis, however, there was sharp decline in profitability showing injury to the domestic industry.

78. The Authority has noted that on production and sales, the domestic industry has been able to show improvement in performance. However, for the purpose of profit and return on investment, margins have been declined for domestic sales of domestic industry indicating material injury to the domestic industry.

I. Causal link and other factors

79. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping have been examined to see whether these any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry. Accordingly, the following parameters have been examined:

i) **Volume and prices of imports from other sources**

IBIS data shows that the subject goods are not being imported from other countries not under investigation. Therefore, the imports from other countries do not affect the prices in the domestic market;

ii) **Contraction in demand and / or change in pattern of consumption**

Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, the injury to the domestic industry has nothing to do with the lack of demand in the country. The data on consumption and demand does not show any change in the pattern of consumption of the product.

iii) **Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

The goods are freely importable. The applicant is the one of the major producer of the subject goods and account for significant domestic production and sales. No other evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has come to the knowledge of the Authority.

iv) **Development in technology**

There is no allegation of significant changes in technology, which could have caused injury to the domestic industry.

v) **Export performance of the domestic industry**

The Authority notes that the export sale of the domestic industry is significant. In respect of production and capacity, the Authority notes that domestic industry is improving its performance as overall equipment utilization was in range of 80%. However, the analysis of financial performance has been done for domestic sales only. Hence, export performance has not captured the injury to the domestic industry on its domestic sales. Therefore, the export performance cannot be considered as factor causing injury to the domestic industry.

Exports	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Export sales	Nos.	54	79	85	70
Trend	Indexed	100	146	157	130

vi) **Productivity of the Domestic Industry**

Productivity of the domestic industry has improved in terms of total output. Therefore, this cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

80. The above non-attribution analysis shows that no other known factors, other than the dumped imports, appear to have affected the domestic industry.

Factors establishing causal link

81. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a. The volume of dumped import from the subject country has sharply increased at significantly lower prices during the injury investigation period, resulting in significant price undercutting and underselling. As a direct consequence, the domestic industry could not increase its prices in line with increase in the cost of production resulting in financial losses.
- b. Increase in import volumes and suppression of domestic prices adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- c. Significant positive price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject country. The domestic industry appears to have responded to decline in import prices by suppressing its prices and suffered financial losses.

82. Therefore, the Authority provisionally concludes that the domestic industry suffers material injury and the injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject country.

I. Magnitude of Injury and injury margin

83. The non-injurious prices for TCP of different sizes produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the

landed value of the exports from the subject country for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exporters from the subject country and their injury margins have been worked out as follows:

	Injury Margin
All exporters from China PR	***

J. Conclusions

84. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the Authority provisionally concludes that:

- ii) The subject goods have entered the Indian market from the subject country at prices less than their normal values in the domestic market of the exporting country;
- ii) The dumping margins of the subject goods imported from the subject country are substantial and above de minimis;
- iii) The domestic industry has suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

K. Indian industry's interest & other issues

85. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of provisional anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

L. Recommendations

86. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on various aspects of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary

investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry, in terms of the Rules laid down, and having provisionally established positive dumping margin against the subject countries, and having concluded that the domestic industry suffers material injury due to such dumped imports, the Authority is of the opinion that imposition of provisional measure is required to prevent injury being caused to the domestic industry during the investigation period.

87. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of subject goods, from the subject country, in the form and manner described hereunder.

88. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority further notes that there is a significant differentiation of the product in terms of its capacity and prices, hence, a provisional duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. Therefore, the Authority recommends imposition of provisional measure as an ad valorem duty, to be worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods from the subject country. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount arrived at by applying the percentage indicated in Col 9 of the duty table is recommended to be imposed from the date of issue of this findings, on imports of all types of Tyre Curing Presses originating in or exported from China PR.

Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	% of CIF Value
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes	China PR	China PR	Any	Any	15
2	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes	China PR	Any	Any	Any	15
3	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes	Any	China PR	Any	Any	15

M. Further Procedures

89. The following procedure would be followed subsequent to notification of the preliminary findings: -

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding;
- (b) Exporters, importers and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make their views known, within 40 days from the date of publication of the findings. Any other interested party may also make their views known within forty (40) days from the date of publication of the findings;
- (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (d) The would hold hearing to hear the views of various interested parties orally;
- (e) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

R. GOPALAN, Designated Authority